International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED)
ISSN: 2320-8708, Vol. 13 Issue 1, Jan.-Feb., 2025

भारिया जनजाति की आवास एवं व्यक्तिगत् स्वच्छता का समाजशास्त्रीय विश्लेषण

(कोरबा जिले के कटघोरा विकासखण्ड के विशेष संदर्भ में)

डॉ श्वेता जैन

सहायक प्राध्यापक समाजशास्त्र, डॉ भीमरॉव अम्बेडकर शासकीय, महाविघालय पामगढ़

सारांश

भारिया जनजाति छत्तीसगढ़ राज्य की प्रमुख जनजातियों में से एक है, जो मुख्य रुप से कोरबा जिले में पायी जाती है। यह जनजाति समाज अपनी विशिष्ट जीवन–शैली एवं संस्कृति के लिए प्रसिद्ध हैं। इसके पश्पात् भी इन्हें अनेक स्वास्थ्य समस्याओं का सामना करना पड़ता है, जिसके अंतर्गत मानव की प्रतिदिन की आदते महत्वपूर्ण रूप से शामिल होती हैं एवं मानव के शरीर तथा आवास की स्वच्छता से संबंधित विभिन्न पैमानो को शामिल किया गया हैं। प्रस्तुत शोध में भारिया जनजाति में अच्छी आवास व्यवस्था एवं व्यक्तिगत स्वच्छता जैसे मुॅह तथा त्वचा की सफाई, हाथ धोना, प्रतिदिन स्नान, शौच के बाद सफाई, जननांगो की सफाई, शरीर की साफ–सफाई, नियमित स्नान, कपड़ो एवं बर्तनों की साफ–सफाई, खान–पान में स्वच्छता, औसतन एवं पौष्टिक आहार, खाद्य एवं रसोई की स्वच्छता, आवास की साफ–सफाई, कचरे को हटाना, गंदे पानी की निकासी, स्वच्छ पेयजल की प्राप्ति आदि के माध्यम से जानकारी को ज्ञात करने का प्रयास किया गया है। प्रस्तुत शोध अध्ययन पूर्णतः अनुभवजन्य तथ्यों के आधार पर स्वास्थ्य एवं स्वच्छता में घनिष्ठ संबंध स्थापित करने का प्रयास किया गया हैं।

महत्वपूर्ण शब्द :– भारिया जनजाति, आवास व्यवस्था, व्यक्तिगत स्वच्छता, स्वास्थ्य, स्वच्छता।

प्रस्तावना

गॉवो का देश कहलाने वाले भारत देश में विभिन्न आर्थिक स्थिति के लोग निवास करते हैं जिससे इनकी आवास की संरचना भी अलग–अलग श्रेणी में बॅटी होती हैं। इन श्रेणियों के अंतर्गत पक्के मकान, मिट्टी के मकान एवं घास–फूस की झोपड़ियॉ आती हैं। आवास की श्रेणी के आधार पर ही इनकी सुविधाओं की स्थिति भी होती हैं, यही इनकी जीवन की गुणवत्ता एवं स्वास्थ्य की स्थिति का निर्धारण करते हैं। आवास की समस्या संपूर्ण दूनिया भर में विघमान हैं परंतु यह समस्या भारत के आदिवासी एवं ग्रामीण क्षेत्रो में सर्वाधिक हैं। मुख्यतः अच्छे एवं सुविधापूर्ण आवास की समस्या और अधिक गंभीर हैं। जिन आवासो का निर्माण किया गया हैं उनमें पानी, नाली, प्राकृतिक प्रकाश, शौचालय आदि की उचित सुविधा ना होने के कारण निवासियों को अनेक कष्टो का सामना करना पड़ रहा हैं। गुप्ता ने मध्यप्रदेश के सहरिया जनजाति के अध्ययन में पाया कि 95 प्रतिशत उत्तरदाता के पास स्वच्छ आवास का अभाव है जहां इनकी झुग्गी झोपड़ियां होती है वहां न तो नालियां है ना ही स्वच्छ हवा एवं रोशनी का कोई प्रबंध होता है **(गुप्ता, 2011, पृ.क. 120-121)**।

शोध अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध कार्य भारिया जनजाति के आवास एवं व्यक्तिगत स्वच्छता के समाजशास्त्रीय अध्ययन का निम्नलिखित उद्देश्य है :

1. भारिया जनजाति के उत्तदाताओं की आवास स्वच्छता को ज्ञात करना।
2. भारिया जनजाति के लोगो के व्यक्तिगत स्वच्छता का अध्ययन करना।

3. भारिया जनजाति के आवास एवं व्यक्तिगत स्वच्छता के माध्यम से स्वास्थ्य की स्थिति का आंकलन करना।

उत्तरदाताओं का चुनाव

प्रस्तावित शोध कार्य का विषय 'भारिया जनजाति की आवास एवं व्यक्तिगत स्वच्छता का समाजशास्त्रीय विश्लेषण (कोरबा जिले के कटघोरा विकासखण्ड के विशेष संदर्भ में)' शीर्षक पर आधारित है। कोरबा जिले के कटघोरा विकासखण्ड के 38 गाँव में भारिया जनजाति निवास करती है जिसमें से दूरी को आधार मानकर (विकासखण्ड से निम्नतम दूरी 15 कि.मी. तक के 04 गांव, एवं 15 कि.मी. से अधिकतम दूरी के 04 गांव) कुल 08 गांव का अध्ययन हेतु चुनाव किया गया हैं। चयनित गांव का विवरण निम्नानुसार हैं–

क्रमांक	पंचायत का नाम	चयनित ग्राम का नाम	वि.ख. से गांव की दूरी समूह (कि.मी.)	कुल परिवार की संख्या	कुल जनजाति परिवार का 60 प्रतिशत उत्तरदाता
1.	छुरीखुर्द	छुरीखुर्द	15 कि. मी.तक	112	67
2.	छुरीकला	बचर	–	23	14
3.	गोपालपुर	गोपालपुर	–	54	32
4.	भाठापारा	भाठापारा	–	49	29
5.	पण्डरीपानी	बिरवट	15 कि. मी. से अधिक	54	32
6.	जमनीपाली	लाटाखार	–	51	30
7.	केंदईखार	केंदईखार	–	101	61
8.	अगारखार	अगारखार	–	39	23
योग		08		483	288

उपरोक्तानुसार अध्ययन के लिये चयनित 08 गांव में कुल 483 भारिया परिवार हैं अध्ययन हेतु कुल परिवार का 60 प्रतिशत अर्थात 288 परिवार का चयन किया जायेगा तथा परिवार के मुखिया को अध्ययन इकाई के रूप में लिया जायेगा।

उपरोक्त विवरण एवं संकलित तथ्य के आधार पर उत्तरदाताओं के आवास एवं व्यक्तिगत स्वच्छता संबंधी जानकारी को ज्ञात करने का प्रयास किया गया है जिसके अंतर्गत निम्नलिखित बिंदुओं को शामिल किया गया है–

आवास में सुविधा की स्थिति

प्रस्तुत शोध अध्ययन में यह भी जानने का प्रयास किया गया हैं कि उत्तरदाता के आवास में कौन–कौन सी सुविधाएं उपलब्ध हैं जो कि तालिका क्रमांक 1.1 में दर्शाया गया हैं –

तालिका क्रमांक 1.1 आवास में उपलब्ध सुविधाओं की स्थिति

	मकानों में सुविधा	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	बैठक – 1. अलग 2. मिलाजुला 3. खुले में 4. लागू नहीं	 231 38 7 12	 80.2 13.2 2.4 4.2
2.	रसोई – 1. अलग 2. मिलाजुला	 265 23	 92.1 7.9
3.	विवाहितों के लिए शयन कक्ष– 1. अलग 2. मिला–जुला 3. लागू नहीं	 126 151 11	 43.7 52.5 3.8
4.	शौचालय – 1. अलग 2. मिला जुला 3. खुले में	 69 125 94	 23.9 43.5 32.6
5.	बकरी, मुर्गी, के लिए 1. अलग 2. मिला–जुला 3. खुले में 4. लागू नहीं	 138 25 35 90	 47.9 8.7 12.2 31.2
6.	गाय भैंस के लिए – 1. अलग 2. मिला–जुला 3. खुले में 4. लागू नहीं	 200 25 26 37	 69.4 8.7 9.1 12.8
7.	अन्य –(कोठी, कोठार) 1. अलग 2. मिला–जुला	 178 110	 61.8 38.2
योग		288	100

आवास में सुविधा संबंधी उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता हैं कि उपरोक्त तथ्य यह दर्शाता हैं कि लगभग समस्त भारिया परिवार के आवास संबंधी सुविधा की सामान्य स्थिति हैं जिसमें अधिकांश भारिया के लिए शयन कक्ष मिला–जुला है। शौच की स्थिति में परिवर्तन हुआ है। अधिकांश भारिया अपने पक्के मकानों में अलग शौचालय निर्मित कर रहे हैं परंतु कच्चे मकानों में आज भी शौच की व्यवस्था ना होने के कारण ये खुले में शौच जाते हैं। अधिकांश भारिया के आवास में बकरी–मुर्गी एवं गाय–भैंस मवेशी रखे जाते है। भारिया जनजाति के प्रत्येक के मकानों में कोठी और कोठार पाये जाते हैं। कोठी का प्रयोग अनाज रखने के लिए होता हैं जो प्रायः मिट्टी का बना होता था, परंतु वर्तमान में पक्के मकानों में पक्की कोठी का निर्माण होने लगा हैं। कोठार घर में बना खलिहान होता हैं जिसमें अनाज मिसाई एवं साग–सब्जी उत्पादन संबंधी कार्य किया जाता हैं।

इनके आवास की स्थिति अच्छी होने का प्रमुख कारण इनके पूर्वजों को प्राप्त भूमि है एवं इनके भूमि पर एन.टी.पी. सी. द्वारा अधिग्रहण किए जाने के कारण इन्हें पर्याप्त मुआवजा भी मिला जिससे इन्होंने अपने पक्के मकानों का निर्माण कर अपनी आवास स्थिति में सुधार किया।

आवास में अन्य मूलभूत सुविधाओं की स्थिति

प्रस्तुत शोध अध्ययन में मकान में उपलब्ध अन्य मूलभूत सुविधाओं की स्थिति को ज्ञात करने का प्रयास किया गया है, जिसका विवरण तालिका क्रं. 1.2 में दर्शाया गया है –

तालिका क्रंमांक 1.2 आवास में अन्य मूलभूत सुविधाओं की स्थिति

क्रं.	मकानों में स्थिति	आवृति	प्रतिशत
1.	प्राकृतिक प्रकाश की व्यवस्था 1. हॉ 2. नही	 175 113	 60.8 39.2
2.	बिजली व्यवस्था – 1. हॉ	 288	 100
3.	पेयजल की व्यवस्था – 1. स्वयं का कुंआ 2. सार्वजनिक कुंआ 3. पाइप लाइन 4. नलकूप 5. स्वयं का कुंआ एवं पाइप लाइन दोनों 6.सार्वजनिक कुंआ एवं पाइप लाइन दोनों 7. पाइप लाइनएवं नलकूप दोनों 8. स्वयं का कुंआ एवं नलकूप दोनों	 12 19 131 19 37 19 32 19	 4.2 6.6 45.5 6.6 12.8 6.6 11.1 6.6
4.	भोजन बनाने के लिए ईंधन 1. लकड़ी 2. गैस 3. लकड़ी एवं गैस 4. लकड़ी एवं कण्डा	 150 06 106 26	 52.1 2.1 36.8 09
5.	गंदे पानी के निकासी हेतु नाली – 1. कच्ची 2. पक्की	 218 70	 75.7 24.3
योग		288	100

आवास में अन्य मूलभूत सुविधाओं की स्थिति संबंधी उपरोक्त तालिका से स्पष्ट हैं कि सर्वाधिक 60.8 प्रतिशत उत्तरदाता के आवास में प्राकृतिक प्रकाश की व्यवस्था हैं जबकि शेष 39.2 प्रतिशत उत्तरदाता के आवास में प्राकृतिक प्रकाश की व्यवस्था नहीं हैं।

बिजली व्यवस्था में शत्–प्रतिशत उत्तरदाता के आवास में बिजली की सुविधा हैं। पेयजल की व्यस्था में सर्वाधिक 45.5 प्रतिशत उत्तरदाता पाइप लाइन का प्रयोग करते हैं, 12.8 प्रतिशत स्वयं का कुंआ एवं पाइप लाइन दोनों, 11.1 प्रतिशत पाइप लाइन एवं नलकूप दोनों, 6.6 प्रतिशत नलकूप, 6.6 प्रतिशत सार्वजनिक कुआं एवं पाइप लाइन दोनों, 6.6 प्रतिशत स्वयं का कुआं एवं नलकूप दोनों तथा शेष 4.2 प्रतिशत स्वयं के कुआं का प्रयोग पेयजल हेतु करते हैं।

भोजन बनाने के लिए ईंधन संबंधी सुविधा में अधिकतम 52.1 प्रतिशत लकड़ी, 36.8 प्रतिशत लकड़ी एवं गैस, 9 प्रतिशत उत्तरदाता केवल गैस का उपयोग करते हैं। गंदे पानी की निकासी हेतु नाली संबंधी सुविधा में अधिकतम 75.7 प्रतिशत उत्तरदाता के आवास में कच्ची नालियों द्वारा तथा शेष 24.3 प्रतिशत के आवास में पक्की नालियों द्वारा गंदे पानी का निकास होता हैं।

घर की सफाई हेतु प्रयुक्त साधन

आवास की नियमित साफ–सफाई का मानव के स्वास्थ्य पर सीधा प्रभाव पड़ता है। शुक्ला एवं खान के अनुसार खैरवार जनजाति अपने मकानों की सफाई का बहुत अधिक ध्यान रखते हैं। घर की लिपाई गोबर या मिट्टी से की जाती है **(शुक्ला एवं खान, 2004, पृ.क. 107-111)**। संकलित तथ्यों द्वारा यह स्पट है कि अध्ययनगत जनजाति के शत्–प्रतिशत् उत्तरदाता घरों की सफाई हेतु गोबर, मिट्टी एवं चूना का प्रयोग करते हैं। ये अपने घरों की दीवार की लिपाई हेतु चूने तथा गोबर का प्रयोग करते हैं तथा अपने घर के आंगन एवं खलिहानों की सफाई हेतु गोबर एवं मिट्टी का प्रयोग करते हैं।

आवास की साफ –सफाई की अवधि

आवास की साफ–सफाई की अवधि के संबंध में पाण्डेय एवं माहेश्वरी ने अपने अध्ययन में पाया कि बैगा जनजातियों में 37.33 प्रतिशत उत्तरदाता सप्ताह में एक बार, 31.34 प्रतिशत एक दिन के अंतराल में, 18 प्रतिशत प्रतिदिन एवं 13.33 प्रतिशत कभी–कभी ही घरों की सफाई करते हैं। अर्थात् ज्यादातर घरों में सप्ताह में ही घरों की सफाई होती है **(पाण्डेय एवं माहेश्वरी, 2018, पृ.क. 41-48)**। कुल चयनित उत्तरदाता में से सर्वाधिक 97.9 प्रतिशत उत्तरदाता प्रतिदिन एवं 2.1 प्रतिशत कभी–कभी घरों की साफ–सफाई करते हैं। इससे स्पष्ट है कि अधिकांश उत्तरदाता अपने आवासों की साफ–सफाई नियमित रूप से करते हैं। इनके द्वारा अपने आवास की साफ–सफाई का बहुत ध्यान रखा जाता है।

बाल एवं नाखून काटने की अवधि

त्वचा से निकलने वाले पसीने तथा बाहरी धूल–मिट्टी के कारण कई प्रकार के अवांछनीय तत्व एवं मैल हमारे शरीर, बाल एवं नाखुन पर जम जाते हैं जिनमें रोग उत्पन्न करने वाले कीटाणु भी रहते हैं, इसलिए यह आवश्यक हैं कि प्रतिदिन इनकी साफ–सफाई के साथ–साथ समय पर बढ़ने पर काट लेना चाहिए। बाल एवं नाखून काटने की अवधि से यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि कुल चयनित उत्तरदाता में से सर्वाधिक 93.4 प्रतिशत उत्तरदाता बढ़ने पर, 4.5 प्रतिशत सप्ताह में एवं 2.1 प्रतिशत उत्तरदाता एक माह के अंतराल में अपने बाल एवं नाखून काट लेते हैं।

इससे स्पष्ट है कि अध्ययनगत भारिया जनजाति के लोग अपने व्यक्तिगत स्वच्छता पर ध्यान देते है एवं अधिकांश लोग अपने बाल एवं नाखून बढ़ने पर काट लेते है।

दांतों की सफाई हेतु प्रयुक्त साधन

व्यक्तिगत् स्वच्छता एवं स्वास्थ्य के लिए शुद्ध जल, वायु संतुलित आहार के साथ–साथ शारीरिक स्वच्छता पर विशेष ध्यान देना अत्यंत आवश्यक हैं। शरीर की बाहरी स्वच्छता के अंतर्गत त्वचा, बाल, नाखुन, दांत, मुंह, मसूढ़े, ऑख, कान, नाक, जीभ आदि की नियमित साफ–सफाई पर विशेष ध्यान देना आवश्यक हैं।

दांतों की सफाई हेतु प्रयुक्त साधन संबधी के अंतर्गत यह ज्ञात हुआ हैं कुल चयनित उत्तरदाता में सर्वाधिक 32.6 प्रतिशत उत्तरदाता दातुन एवं ब्रश, 23.9 प्रतिशत ब्रश एवं गुड़ाखु, 19.5 दातुन ब्रश व गुड़ाखु, 11.1 प्रतिशत केवल ब्रश, 8.7 प्रतिशत केवल दातुन तथा 4.2 प्रतिशत दातुन एवं गुड़ाखु से अपने दांतों की सफाई करते है।

स्नान करने की प्रवृत्ति

स्नान करने की प्रवृत्ति के संबंध में पाण्डेय एवं माहेश्वरी के अनुसार बैगा जनजाति के 52 प्रतिशत उत्तरदाता कभी–कभी, 40 प्रतिशत दिन में दो बार, 8 प्रतिशत सप्ताह में किसी भी दिन स्नान करते है **(पाण्डेय एवं माहेश्वरी, 2018 पृ.क. 41-48)**। उपरोक्त विवरण एवं संकलित तथ्य के आकार पर हमने अध्ययनगत जनजाति

के उत्तरदाता से स्नान करने की प्रवृत्ति की जानने का प्रयास किया है एवं हमने अपने अध्ययन में पाया कि शत्–प्रतिशत उत्तरदाता प्रतिदिन स्नान करते है।

कपड़े धोने की प्रवृत्ति

स्वस्थ्य रहने के लिए एक ओर जहां व्यक्तिगत स्वच्छता के अंतर्गत दांत की सफाई, बाल एवं नाखून काटना, प्रतिदिन स्नान करना आवश्यक है वहीं दूसरी ओर स्वच्छ कपड़े पहनना एवं नियमित स्नान करना भी अत्यंत आवश्यक है। कपड़े धोने की प्रवृत्ति से निष्कर्ष प्राप्त होता है कि कुल चयनित उत्तरदाता में अधिकांश 78.1 प्रतिशत उत्तरदाता प्रतिदिन, 13.2 प्रतिशत सप्ताह में एवं 8.7 प्रतिशत उत्तरदाता कभी–कभी अर्थात कोई निश्चित दिन नहीं में अपने कपड़ों को धोते है। इससे स्पष्ट है कि भारिया जनजाति के लोग अपने दैनिक उपयोगी वस्त्र को प्रतिदिन धोते है।

शौचालय की सुविधा

शौचालय संबंधी स्थिति के अंतर्गत कुजुर ने अपने पहाड़ी कोरवा जनजाति के अध्ययन में पाया है कि शत– प्रतिशत उत्तरदाता के मकान में शौच की व्यवस्था नहीं है अर्थात् शौच के लिए खुले मैदान का उपयोग करते हैं **(कुजुर, 2008, पृ.क. 89-92)** । प्रस्तुत शोध में उत्तरदाता के आवास में शौचालय की सुविधा संबंधी आरेख से स्पष्ट है कि कुल चयनित उत्तरदाता में सर्वाधिक 67.4 प्रतिशत उत्तरदाता के आवास में शौचालय की सुविधा है एवं 32.6 प्रतिशत उत्तरदाता के आवास में शौचालय की सुविधा नहीं है अर्थात् ये लोग खुले में शौच जाते हैं –

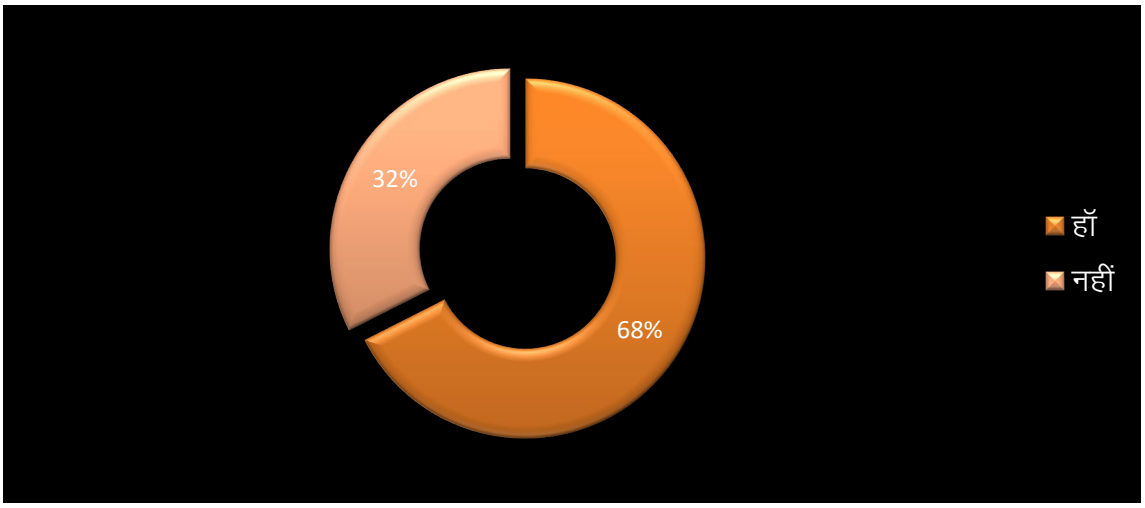

आरेख कमांक –1

उपरोक्त तथ्य दर्शाता है कि लगभग अधिकांश भारिया परिवार अपने मकानों में शौचालय का नर्माण कर चुके हैं लेकिन आज भी ऐसे बहुत से भारिया परिवार है जिनकी आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं होने के कारण ये लोग शौचालय का निर्माण नहीं कर पाए हैं।

यदि हॉ तो शौचालय का निर्माण किसके द्वारा

जल से जनित बीमारियां कुल बीमारियों का प्रतिशत होती है जिसका प्रमुख कारण जल का दूषित होना है। जल के दूषित होने का एक प्रमुख कारण पैथोजन है जिसका वाहक अवयव मानव मल होता है, इसलिए इसका सुरक्षित निपटान आवश्यक है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए 1986 में केंद्रीय ग्रामीण स्वच्छता कार्यक्रम प्रारंभ किया गया जिसके तहत केवल बी.पी.एल. परिवार के लिए ही शौचालय का निर्माण सम्मिलित था। इसी के आधार पर 1999 में भारत सरकार द्वारा संपूर्ण स्वच्छता अभियान प्रारंभ किया गया जिसमें स्वच्छता के समस्त घटकों का समावेश किया गया। 01 अप्रैल 2012 में इसमें यथोचित परिवर्तन करते हुए निर्मल भारत अभियान के नाम से क्रियान्वित किया गया।

02 अक्टूबर 2014 से माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा निर्मल भारत मिशन रखा गया। जिसके अंतर्गत बी.पी.एल. परिवारों के अतिरिक्त 6 प्रकार के ए.पी.एल. परिवारो के लिए भी व्यक्तिगत पारिवारिक शौचालय के लिए प्रोत्साहन राशि प्रदान की जाएगी जिसमें अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, लघु एवं सीमांत कृषक, भूमिहीन मजदूर शारीरिक रूप से अक्षम एवं महिला मुखिया वाले परिवार को शामिल किया गया।

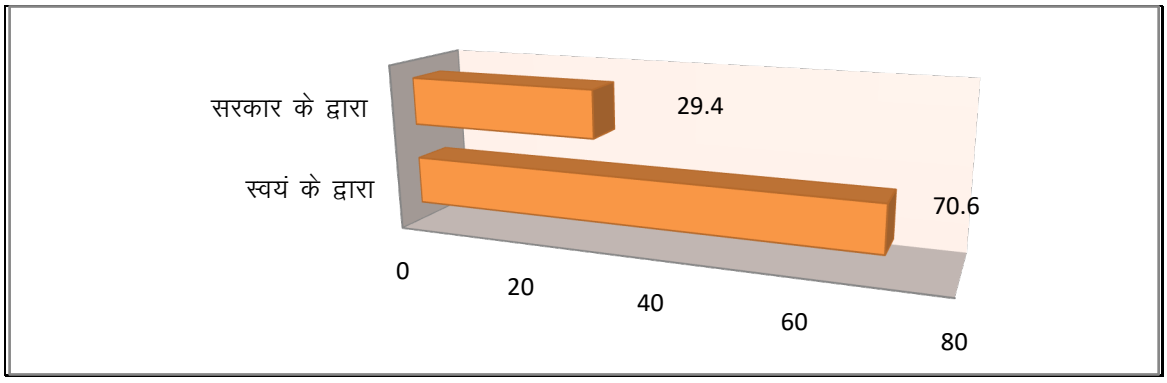

आरेख क्रमांक –2

शौचालय का निर्माण संबंधी उपरोक्त आरेख से स्पष्ट है कि कुल चयनित उत्तरदाता में से सर्वाधिक 70.6 प्रतिशत उत्तरदाता के अनुसार शौचालय का निर्माण स्वयं के द्वारा किया गया है जबकि शेष 29.4 प्रतिशत उत्तरदाता के अनुसार शौचालय का निर्माण सरकार के द्वारा किया गया है। स्पष्ट हैं कि कम दूरी वाले गांव तुलना में अधिक दूरी वाले गांव के उत्तरदाता के आवास में शौचालय का निर्माण सर्वाधिक स्वंय के द्वारा किया जाता हैं।

स्वंय के द्वारा निर्मित शौचालय

यदि नहीं तो शौच हेतु का स्थान

अध्ययनगत जनजाति के घर में यदि शौचालय नहीं है तो वे शौच हेतु कहॉ जाते है, जिसके अध्ययन ने हमें ज्ञात हुआ हैं सर्वाधिक 59.6 प्रतिशत उत्तरदाता शौच हेतु मैदान जाते है एवं शेष 40.4 प्रतिशत उत्तरदाता शौच हेतु खेत जाते है। इस प्रकार स्पष्ट है कि आज की जनजातियॉ शौच हेतु खेत एवं मैदान का प्रयोग करती है।

शौच प्रयोग सफाई हेतु पानी का स्त्रोत एवं शौच के पश्चात हाथ धोने हेतु प्रयुक्त साधन

प्रस्तुत शोध प्रबंध के माध्यम से अध्ययनगत जनजाति के उत्तरदाता से यह ज्ञात करने का प्रयास किया गया है कि यदि शौच हेतु खुले मैदान में जाते है तो पानी का प्रयोग कैसे करते है। उत्तरदाता से प्राप्त जानकारी के अनुसार सर्वाधिक 73.4 प्रतिशत उत्तरदाता शौच हेतु डब्बे में पानी लेकर प्रयोग करते है एवं शेष 26.6 प्रतिशत उत्तरदाता शौच हेतु तालाब के पानी का सीधा उपयोग करते है।

अध्ययनगत जनजाति के ज्यादातर लोग मिट्टी से अथवा राख से हाथ धोते है जो कि इतने प्रभावकारी नहीं होते जबकि साबुन से हाथ धोने के लाभ के बारे में यहॉ लोग जागरूक नहीं है।

जल संग्रह हेतु पात्र का प्रयोग

प्रस्तुत शोध प्रबंध में अध्ययनगत् जनजाति से यह जानने का प्रयास किया गया है कि उत्तरदाता के द्वारा जल संग्रह हेतु किस पात्र का प्रयोग किया जाता है। संकलित तथ्य के अनुसार शत्–प्रतिशत् उत्तरदाता के द्वारा जल संग्रह हेतु मिट्टी के बर्तन, एल्युमीनियम बर्तन तथा अन्य में प्लास्टिक, टिन, लोहा तथा पीतल के बर्तन का प्रयोग किया जाता है।

आहार एवं मद्य सेवन से संबंधित

आहार एवं मद्य सेवन मानव के स्वास्थ्य को बहुत अधिक प्रभावित करता है। कभी जनजाति समाज जंगलों में रहकर वहां के पेड़ पौधों एवं मोटे अनाज की फसलों पर निर्भर रहता था। जनजाति को अपने संचित ज्ञान से यह ज्ञात था कि किस समय एवं किस मौसम में उनहें क्या खाना चाहिए। वे बाढ़ एवं अकाल के वक्त भी स्वयं एवं स्वयं के परिवार को सुरक्षित रख लिया करते थे। मोटे अनाज, फल–फूल एवं पत्तियों तथा जंगली जानवरों के शिकार से उनके शरीर को यथोचित पोषक तत्व मिल जाया करते थे परंतु आज न तो जंगलों पर इनकी निर्भरता बची है और न ही मोटे अनाज इकने हाथ में रहा है। इस कारण इनके खानपान पर बुरा असर पड़ रहा है।

जनजातियो को अनपढ़ समझ कर इनके सदियों पुराने संचित प्रबंधन एवं ज्ञान की कही पूछ–परख नहीं है। इनकी नई पीढ़ियॉ भी अब इन्हें भूलने लगी है। जिससे ये भुखमरी और कुपोषण का शिकार हो रही है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में उत्तरदाता के आहार एवं मद्य सेवन संबंधी जानकारी प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित कारकों का विस्तार पूर्वक अध्ययन किया गया हैः–

भोजन का स्वरूप

भारत देश में जनजातियों के खानपान में सरलता पाई जाती है। अधिकांश जनजाति अपना भोजन प्राप्त करने के लिए जंगलों, वनां एवं शिकार पर निर्भर रहती है जिसके कारण जनजातियां अधिकांशतः शाकाहारी एवं मांसाहारी दोनों ही होते है। पाण्डेय एवं पाण्डेय ने अपने अध्ययन में यह बताया है कि टोडा जनजाति के लोग अपनी भैंस संस्कृति के कारण संपूर्ण अर्थव्यवस्था भैंसो के चारो तरफ घूमती रहती है। ये न तो कृषि करने है, न ही उद्यान कृषि, या किसी प्रकार की हस्तकला ये शाकाहारी होते है तथ जो थोड़ा बहुत खाद्य एकत्र करते है वह केवल फल, कंद–मूल का ही होता है**(पाण्डेय एवं पाण्डेय, 2012, पृ.क. 82-89)**।

उत्तरदाताओं के भोजन के प्रकार को जानने का प्रयास किया गया जिसमें यह पाया गया कि शत्–प्रतिशत उत्तरदाता शाकाहारी एवं मांसाहारी दोनों होते है।

शाकाहारी भोजन का स्वरूप

प्रस्तुत शोध में उत्तरादाताओं के शाकाहारी भोजन का स्वरूप जानने का प्रयास किया गया है जिसमे यह पाया गया है कि भारिया जनजाति मुख्य रूप से चावल एवं गेहुं से बने खाद्य पदार्थ का सेवन करने है। दालों में उड़द,

अरहर, हिरवां आदि उपयोग में लाते है जिसमें हिरवां का उत्पादन स्वयं करते है। इसके अतिरिक्त मौसमी सब्जी जिसके अंतर्गत लौकी, तरोई, भाटा, भिंडी, मखना, बखटी, खीरा, मुनगा, फूलगोभी, टमाटर आदि खाते है साथ ही स्थानीय भाजी जिसके अंतर्गत चेच, पटुआ, अमारी, सुनसुनिया, पालक, चौलाई, मेथी, कोईलार, खेड़ा आदि का सेवन करते है।

मांसाहारी भोजन का स्वरूप

प्रस्तुत शोध अध्ययन में उत्तरदाता के मांसाहारी भोजन के स्वरूप को जानने का प्रयास किया गया है।शर्मा ने अपने अध्ययन में पाया है कि भारिया जन मांसाहारी होते है। बकरी, खरगोश, मछली, पक्षी का मांस खाते है। पक्षियों में तीतर, गुडरू, जिहुरा व पड़की आदि का मांस खाते है। खरगोश एवं पक्षियों का शिकार फंदो से करते है। मछलियां खींचकर एवं जाल से फंसाकर प्राप्त करते है, भरियाजन शिकार स्वयं के खाने के लिए करते है **(शर्मा, 1994-95, पृ.क. 6)** ।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में उत्तरदाता के मांसाहारी भोजन के स्वरूप को जानने का प्रयास किया गया है। उपरोक्त विवरण एवं संकलित तथ्य के आधार पर यह पाया गया है, कि भारिया जनजाति मांसाहारी होते हैं। बकरा, मुर्गा, खरगोश, मछली का मांस खाते है। पक्षियों का शिकार करके भुनकर खाते है, जिसमें तीतर, बटेर, पड़की, जुहरा आदि पक्षियों का सेवन करते है।

उत्तरदाताओं द्वारा औसत सब्जी का उपयोग

मनुष्य केवल अनाज वाली फसलों पर ही आधारित नहीं रह सकता है। उसे भोजन के साथ–साथ फल एवं सब्जियों की आवश्यकता महसूस होती है। फल एवं सब्जी मनुष्य के शरीर की रक्षा बहुत सी बीमारियों से करते है। भोजन विशेषज्ञों के अनुसार प्रति व्यक्ति को 280 ग्राम सब्जियों का उपभोग करना चाहिए जिसमें 35 ग्राम जड़ वाली सब्जियां, 85 ग्राम अन्य सब्जियां तथा 110 ग्राम पत्ता वाली सब्जियां शामिल है।

आदिवासी समाज के पास खान–पान का अपना एक तंत्र है, यह अपने आप में पूर्ण है तथा इसी के चलते आदिवासी समाज शताब्दियों से स्वयं को स्वस्थ एवं प्रसन्न बनाए रखे हुए है, आधुनिक औद्योगिक खेती ने मनुष्य की उसकी नैसर्गिकता ही छीन ली है। अधिकांश जनजातिया जिस भोजन को विशेष एवं अपनी संस्कृति समझती है वह उनकी परंपरा एवं संस्कृति से बाहर के लोगों के लिए आश्चर्य हो जाता है। जनजाति अपने विशेष भोजन की स्वास्थ्य के लिए लाभदायक मानती है। खाने में औसत सब्जी का उपयोग संबंधी अध्ययन से स्पष्ट है, कुल चयनित उत्तरदाता में 73.9 प्रतिशत प्रतिदिन, 18.8 प्रतिशत 3–4 दिनों में एक बार, 3.8 प्रतिशत हफ्ते में एक बार एवं 3.5 प्रतिशत उत्तरदाता कभी–कभी औसतन सब्जियों का प्रयोग करते हैं। उपरोक्त तथ्य इस बात को दर्शाता है कि भारिया जनजाति अपने भोजन में औसतन सब्जियों का प्रयोग प्रतिदिन करती है जो इन्हें सुपोषित रखती है।

मादक पदार्थों का सेवन

आदिवासियों में मदिरापान जैसे मादक पदार्थों के सेवन का अत्यधिक चलन है। मदिरापान सदियों से आदिवासी के सामाजिक परंपरा का एक भाग रहा हैं ये अपने घरों में ही मदिरा बनाती है। जिसमें कोई विशेष नशा नहीं होता है। मादक पदार्थों के सेवन की स्थिति संबंधी अध्ययन से स्पष्ट होता है कि कुल चयनित उत्तरदाताओं में अधिकतम 77.4 प्रतिशत उत्तरदाताओं द्वारा मादक पदार्थों का सेवन किया जाता है एवं 22.6 प्रतिशत के अनुसार मादक पदार्थों का प्रयोग नहीं किया जाता है। उपरोक्त तथ्य इस बात को दर्शाते है कि अधिकांश भारियाजन मादक पदार्थों का सेवन करते है परंतु स्वास्थ्य हित की दृष्टि से बहुत से भारियाजनों के द्वारा मादक पदार्थों का सेवन नहीं किया जाता है।

मादक पदार्थों का सेवन का प्रकार

प्रस्तुत शोध अध्ययन में उत्तरदाताओं के द्वारा मादक पदार्थों के सेवन का प्रकार जानने का प्रयास किया गया है–

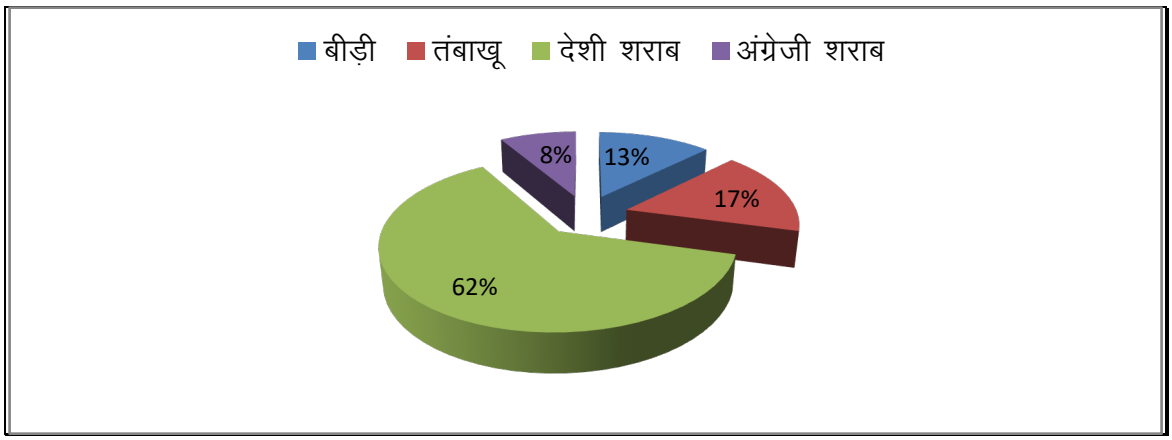

आरेख क्रमांक–3

मादक पदार्थों का सेवन के प्रकार संबंधी आरेख से स्पष्ट है कि कुल चयनित उत्तरदाता में सर्वाधिक 62.3 उत्तरदाता देशी शराब का, 16.6 प्रतिशत तम्बाकू, 12.6 प्रतिशत बीड़ी एवं 8.5 प्रतिशत अंग्रेजी शराब का सेवन करते है। साथ ही जनजाति के लोग गांजा–भांग एवं अन्य मादक पदार्थों का सेवन नहीं करते है।

परिवार के अन्य सदस्यों द्वारा मादक पदार्थों का सेवन

अध्ययन से ज्ञात होता हैं कि भारिया जनजाति के प्रत्येक उम्र एवं लिंग के लोगों के द्वारा मादक पदार्थों का प्रयोग किया जाता है अर्थात् मादक पदार्थों का सेवन अन्य जनजाति की भांति इनके जीवन का एक सामान्य अंग है।

मादक पदार्थों का सेवन कब–कब

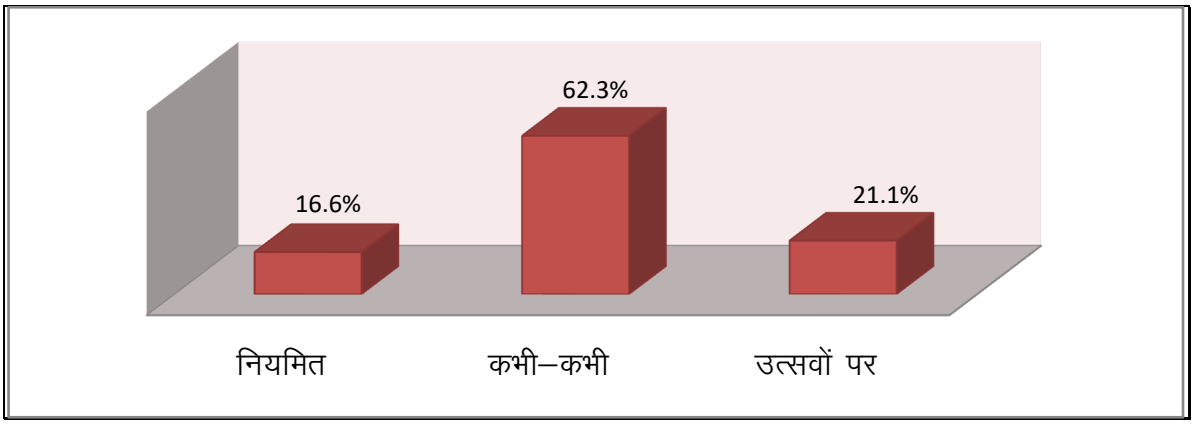

आरेख क्रमांक–4

उपरोक्त तालिका से ज्ञात होता हैं कि कुल चयनित उत्तरदाता में सर्वाधिक 62.3 प्रतिशत कभी–कभी, 21.1 प्रतिशत उत्सवों पर तथा 16.6 प्रतिशत उत्तरदाता नियमित मादक पदार्थों का सेवन करते है। इस प्रकार स्पष्ट है कि वर्तमान में मादक पदार्थों का सेवन भारियाजनों का अनिवार्य अंग नहीं रह गया है। कभी–कभी खुशी के मौके, तीज–त्योहारों पर मादक पदार्थों का सेवन करते है।

निष्कर्ष

अध्ययनगत जनजाति के आवास व्यवस्था के अध्ययन से यह ज्ञात होता हैं कि समस्त उत्तरदाता स्वयं के द्वारा निर्मित मकानों में रहते हैं जिसमें आधे से अधिक उत्तरदाताओं के आवास में प्राकृतिक **प्रकाश** एवं बिजली की सुविधा हैं। भोजन बनाने के लिए ईंधन संबंधी सुविधा में आधे से अधिक उत्तरदाता लकड़ी का प्रयोग करते हैं। गंदे पानी की निकासी हेतु नाली संबंधी सुविधा में तीन चौथाई उत्तरदाताओं के आवास में कच्ची नालियां हैं।

अध्ययनगत् जनजाति के **आवास एवं व्यक्तिगत स्वच्छता की स्थिति** के अंतर्गत अधिकांश उत्तरदाता के द्वारा नियमित रूप से प्रतिदिन अपने आवासों की साफ–सफाई की जाती है, जिसके अंतर्गत समस्त के द्वारा घरों की सफाई हेतु गोबर, मिट्टी एवं चूना का प्रयोग करते है। कुल चयनित उत्तरदाता बाल एव ंनाखून काटने, दांतों की सफाई, स्नान करने की प्रवृत्ति आदि के संबंध में जागरुकता हैं।

आवास में शौचालय की स्थिति में परिवर्तन हुआ है जिसमें अधिकांश भारिया अपने पक्के मकानों में अलग शौचालय निर्मित कर रहे हैं परंतु कच्चे मकानों में आज भी शौच की व्यवस्था ना होने के कारण ये खुले में शौच जाते हैं एवं अधिकांश उत्तरदाताओं के आवास में शौचालय का निर्माण स्वयं के द्वारा किया गया है।

आधे से अधिक मिट्टी से अथवा राख से हाथ धोते है जो कि इतने प्रभावकारी नहीं होते जबकि साबुन से हाथ धोने के लाभ के बारे में यहॉ लोग जागरूक नहीं है।

अध्ययनगत जनजाति के समस्त उत्तरदाताओं के द्वारा जल संग्रह हेतु मिट्टी के बर्तन, एल्युमीनियम तथा अन्य में प्लास्टिक, टिन, लोहा तथा पीतल के बर्तन का प्रयोग किया जाता है। कुल चयनित उत्तरदाता में से समस्त शाकाहारी एवं मांसाहारी दोनों का प्रकार का भोजन ग्रहण करते हैं।

लगभग तीन–चौथाई उत्तरदाता अपने भोजन में औसतन सब्जियों का प्रयोग प्रतिदिन करते है जो इन्हें सुपोषित रखती है। उपरोक्त अध्ययन से प्रतीत होता है कि वर्तमान समय मे भारिया जनजाति अपने आवास एवं व्यक्तिगत स्वच्छता पर विशेष ध्यान देने लगे हैं।

संदर्भ सूची

[1]. Gupta, M. vf/kdka”k (2011). *Janjatiyo Ka Samajik-Aarthik utthan.* Arjun Publishing House.
[2]. Shukla, D. M., & Khan, M. S. (2004). *Khairwar Janjati Samajik Aarthik Avam Sanskritik Adhayayan* (Vol. 1). New Delhi: Arjun Publishing House.
[3]. Pandey, V., & Maheshwari, A. (2018). Baiga Janjatiyo mein Swasthya K Prati Jagrukta. *Media Mimansa* , 41-48.
[4]. Kujur, N. (2008). Korwa Janjati Ki Samajik-Aarthik Sthithi Ka Ek Samajshatriya Adhyayan. unpublished Thesis, Pt. Ravishankar Shukla University, Raipur(c.g.) .
[5]. Pandey, G., & Pandey, A. (2012). *Bharat Ki Janjatiya* (Vol. 1). Ansari Road, Dariyaganj,New Delhi: Radha Publications.
[6]. Sharma, S. K. (1994-95). *Katghora Tehsil Ki Bhariya Jati Ki Samajik Sanrachna.* Gondwana Land Samachar.